तोशिया का सपना

पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – कनक शशि

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा नूतन प्रिंटर्स, एफ-89/12, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-I, नई दिल्ली 110020 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-885-0

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को '*समझ के साथ*' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : *पी. राजाकुमार*

मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*

मुख्य उत्पादन अधिकारी : *शिव कुमार*

मुख्य व्यापार प्रबंधक : *गौतम गांगुली*

तोसिया का सपना

नानी

तोसिया

एक दिन तोसिया ने सपना देखा।
तोसिया बहुत सपने देखती है।
वह उठकर सपनों के बारे में बात भी करती है।

तोसिया को सपना आया कि दुनिया के सारे रंग उड़ गए हैं।
कहीं कोई रंग नहीं बचा।
उसने देखा कि सब कुछ सफ़ेद-सफ़ेद हो गया है।

तोसिया उठी और सपने को याद करने लगी।
वह एकदम से घबरा गई।
तोसिया सोचने लगी कि क्या सचमुच रंग गायब हो गए हैं।

तोसिया रसोई में गई।
वहाँ बहुत सारे रंग-बिरंगे मसाले रखे हुए थे।
लाल मिर्च, जीरा, हल्दी, धनिया, मेथी।

तोसिया उठकर बाहर बगीचे में गई।
वहाँ रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे।
गेंदा, चमेली, सदाबहार, गुलाब, सूरजमुखी।

तोसिया ने देखा कि उसके कपड़ों में रंग हैं।
मम्मी पापा के कपड़ों में भी रंग हैं।
घर में भी खूब सारे रंग दिख रहे थे।

तोसिया मम्मी के साथ बाज़ार चल पड़ी।
वहाँ खूब सारी रंग-बिरंगी सब्ज़ियाँ थीं।
गाजर, बैंगन, टमाटर, सेम, मटर।

बाज़ार में पतंग की दुकान भी थी।
दुकान में खूब सारी रंग-बिरंगी पतंगें थीं।
काली, पीली, नीली, हरी, नारंगी।

मम्मी चुन्नी की दुकान पर गईं।
वहाँ खूब सारी रंग-बिरंगी चुन्नियाँ थीं।
गुलाबी, बैंगनी, फिरोज़ी, आसमानी, भूरी।

बाज़ार में गुब्बारेवाला खड़ा हुआ था।
उसके पास खूब सारे रंग-बिरंगे गुब्बारे थे।
नीले, पीले, हरे, लाल, गुलाबी।

तोसिया ने खूब सारे रंग देखे।
वह खुश हो गई कि रंग गायब नहीं हुए हैं।
वह रंगों को गिनने लगी।

तोसिया घर आकर दोपहर को सो गई।
उसने उठकर देखा कि नानी की सहेलियाँ आई हुई हैं।
उन सबके बाल सफ़ेद-सफ़ेद हैं।

तोसिया को एक बात याद आई।
वह रात को नानी के साथ सोई थी।
इसलिए सपने में सब सफ़ेद-सफ़ेद दिखा होगा।

तोसिया नानी के बालों को गौर से देखने लगी।
वह नानी के बालों को छू-छूकर देखने लगी।
तोसिया सोचने लगी कि नानी के बाल सफ़ेद क्यों हैं।

उसने नानी से पूछा कि उनके बालों का रंग कहाँ गया।
नानी बोलीं कि पहले उनके बाल भी काले थे।
फिर उनके बालों का रंग तोसिया के बालों में चला आया।

तोसिया और मिली की और कहानियाँ

2084

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

रु. 10.00

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-885-0